International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 4; Issue 8; August 2017; Page No. 278-281

रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का अध्ययन

डॉ. प्रमिला सिंह

प्राचार्य, एम.एल. चौरसिया शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का अध्ययन पर आधारित है। वर्तमान समय में पाठ्य सहगामी क्रिया का पाठ्यक्रम के साथ में होना छात्र के सर्वांगीण विकास के लिए आवश्यक है। किन्तु हाई स्कूल स्तर पर छात्र की ग्रहणशीलता के अनुरूप कौन–कौन सी पाठ्यसहगामी क्रिया विद्यालय में आयोजित की जाए यह कठिनाई प्रत्येक शिक्षक महसूस करता है। अतः मैने अपने शोध हेतु इस विषय का चयन किया जिससे प्रत्येक शिक्षक पाठ्यसहगामी क्रिया की महत्ता को जान सके तथा किस स्तर पर किस प्रकार की और कौन–कौन सी गतिविधियाँ विद्यालय में संचालित की जानी चाहिए। शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तो अधिक होती है साथ ही ये क्रियाएं विद्यार्थियों में अनेक नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चरित्रिक गुणों का विकास करती है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

शब्द कुंजी : रीवा विकासखण्ड, हाई स्कूल स्तर, पाठ्य सहगामी, विद्यार्थी, सर्वांगीण विकास

1. प्रस्तावना

शिक्षा मानव विकास का मूल्य सार तत्व है। इसी से वर्तमान समय में बालक की सम्पूर्ण शक्तियों का पूर्ण उद्विकास की दिशा ही शिक्षा में निहित है। यह कहा जाता है कि विद्यार्थियों के मानसिक, नैतिक, शारीरिक और अध्यात्मिक विकास का शिक्षा की मूल धुरी से ही प्राप्त होता है। वही विद्यार्थी समाज में अपने व्यक्तित्व को पूर्णरूप से समायोजित कर के यश को प्राप्त करता है। इसी तारतम्य में कुछ शिक्षाशास्त्रियों के चिन्तन का गहरा प्रभाव दिखाई देता है, जिसका उल्लेख इस प्रकार किया जा रहा है–

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

प्लेटों के मतानुसार–"शिक्षा का कार्य मनुष्य के शरीर और आत्मा को वह पूर्णता प्रदान करना है जिसके कि वे योग्य हैं।"

एक समय था जब विद्यालयों को केवल अध्ययन बल पर दिया जाता था, अध्ययन के अतिरिक्त खेलकूद आदि की क्रियाओं को किसी प्रकार का प्रोत्साहन नहीं दिया जाता था। प्राचार्य विद्यालयों में किसी प्रकार के आमोद–प्रमोद को स्थान देना उचित नहीं समझते थे क्योंकि उनेक मत के अनुसार इन कार्यों में छात्रों का व्यर्थ ही समय नष्ट होता है।

परन्तु धीरे–धीरे शिक्षाशास्त्रियों ने अनुभव किया कि जिन विषयों तथा क्रियाओं को अब तक अतिरिक्त समझा गया है, वे पाठ्य–सहगामी हो सकती हैं। इसी कारण वर्तमान समय में वाद–विवाद, साहित्यिक कार्यक्रम, खेल–कूद आदि को अतिरिक्त क्रियाएँ न मानकर सहायक माना जाता है। अतएव 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सन्दर्भ में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर लिया गया है, और शैक्षिक प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग माना गया है।

ऐसी क्रियाएँ जो विद्यार्थियों के कक्षा अध्ययन से संबधित न हो, लेकिन जिसमें भाग लेकर विद्यार्थियों अपना सामाजिक, नैतिक, शारीरिक और संवेगात्मक विकास कर सकता है, तथा वे भी पाठ्यक्रम के अभिन्न अंग कहें जा सकते हैं को पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के लिए उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं।

मुनरो ने अपने विश्वकोष में विद्यालयीन क्रियाओं का अर्थ स्पष्ट करते हुए, बताया है कि ''पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आशय विद्यालयों में पुस्तकीय अध्ययन के अतिरिक्त संस्थानों द्वारा प्रतिस्थापित उन ऐच्छिक क्रियाओं के समायोजन से है, जो विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए नितांत आवश्यक है।

विद्यालयों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, विद्यालय के साधनों तथा स्थानीय परिस्थितियों को ध्यान में रखकर ही इन क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। विद्यालयों में कितने प्रकार की सहगामी क्रियाएँ रखी जाएं, इसकी कोई सीमा रेखा नहीं खींची जा सकती।

2. पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के संगठन के सिद्धांत

पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के संगठन, प्रशासन एवं निरीक्षण में निम्नलिखित सिद्धांतों को ध्यान में रखना चाहिए–

- **क्रिया संगठन सिद्धान्त :** विद्यालय में जिस क्रिया का संगठन किया जाए, वह विद्यालय के उद्देश्यों की पूर्ति में सहायक होनी चाहिए। यह केवल आनन्द प्रदान करने वाली क्रिया ही न हो।
- **साधन उपलब्धता सिद्धान्त :** विद्यालय में किसी क्रिया को संचालित करने से पूर्व उसकी योजना बना लेनी चाहिए। योजना का निर्माण करते समय विद्यालयों में साधनों की उपलब्धि पर ध्यान देना आवश्यक है।
- **साधन की सुनिश्चितता का सिद्धान्त :** प्रशासन को सरल बनाने तथा विभिन्न संघर्षों को दूर करने के लिए इन क्रियाओं को विद्यालय की समय तालिका में स्थान प्रदान किया जाना चाहिए।
- **छात्र सहभागिता सिद्धान्त :** इन क्रियाओं में जहां तक हो सके अधिक से अधिक छात्र भाग लें।

- **उचित निरीक्षण व पर्यवेक्षण सिद्धान्त :** प्रत्येक क्रिया का उत्तरदायी एक शिक्षक हो, जो भली प्रकार से निरीक्षण कार्य आदि करे।
- **स्वाशासन का सिद्धान्त :** अध्यापक इन क्रियाओं में छात्रों को स्वशासन प्रदान, करें, जहां तक हो सके छात्र ही इन क्रियाओं का संचालन करे। अध्यापक केवल मार्गदर्शक ही रहे।
- अनुमति का सिद्धान्त इस सिद्धान्त के अनुसार पाठ्यसहगामी क्रियाओं के संचालन से पूर्व संस्था प्रमुख की अनुमति ली जानी चाहिये।
- स्पष्टता एवं सुनिश्चितता सिद्धांत : इस सिद्धान्त के अनुसार संचालित होने वाली क्रियायें पूर्व स्पष्ट व निर्धारित होनी चाहिये।
- **योग्यता व रूचि सिद्धान्त :**शिक्षकों को इन क्रियाओं का भार योग्यता तथा रुचि को ध्यान में रखते हुए दिया जाय।
- **स्तर का सिद्धान्त :** क्रियाएँ जहाँ तक हो सके, बौद्धिक तथा नैतिक स्तर को उठाने वाली हो तथा क्रियाओं का संग्रहण करते समय छात्रों की आयु तथा मानसिक अवस्था को ध्यान में रखा जाना चाहिए।

3. शब्दों का स्पष्टीकरण

रीवा विकासखण्ड : रीवा जिले के अन्तर्गत आने वाले 9 विकासखण्डों में से एक विकासखण्ड है, जो जिला मुख्यालय में स्थित है।

हाई स्कूल स्तर : प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत हाई स्कूल स्तर से अभिप्राय म.प्र. शासन द्वारा मान्यता प्राप्त शासकीय एवं अशासकीय विद्यालय।

पाठ्य सहगामी क्रियायें – प्रस्तुत शोध के अन्तर्गत हाई स्कूल स्तर के समस्त विषयों के पाठ्यक्रम में सम्मिलित वे समस्त शैक्षिक गतिविधियाँ, सांस्कृतिक व साहित्यक गतिविधियाँ जो छात्रों में विषयवस्तु के प्रति रूचि जागृत करती है जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव छात्रों की बौद्धिक क्षमता व शारीरिक विकास पर होता है।

विद्यार्थी : प्रस्तुत शोध कार्य में विद्यार्थियों से तात्पर्य कक्षा–9 व कक्षा–10 के विद्यार्थियों से जो कि रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों में अध्ययन कर रहें है।

4. शोध की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा सिद्धान्तों के अनुसार छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु वर्तमान पाठ्यक्रम में पाठ्य सहगामी क्रियाओं को विशेष बल दिया जा रहा है परन्तु अवलोकन एवं सर्वेक्षण से यह ज्ञात होता है कि पाठ्य सहगामी क्रियाएँ पूर्णतः संचालित नहीं की जा रही है। अतः प्रस्तुत शोध कार्य के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संचालन एवं निरूपण में क्या विसंगतियाँ है।

5. उद्देश्य

शोध समस्याओं के समाधान की दिशा में शैक्षिक अनुसंधान के लिए कुछ निश्चित उद्देश्य होते हैं, जिनको प्राप्त करने की दिशा में शोध उन्मुख होता है। सम्बन्धित षोध कार्य हेतु निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य शोधार्थी द्वारा निर्धारित किये गये हैं–

1. शोध कार्य हेतु न्यादर्शित हाई स्कूल पर संचालित होने वाली पाठ्यसहगामी क्रियाओं की वर्तमान स्थिति को जानना।
2. पाठ्यसहगामी क्रियाओं के संचालन व क्रियान्वयन के प्रति संस्था प्रमुख, शिक्षकों एवं छात्रों के दृष्टिकोण के जानना।

6. परिकल्पनाएँ

शोधार्थी शोध विषय पर अपने लिये कुछ प्रष्न करता है। उसके उत्तर वह स्वयं देता है। शोधार्थी के अनुसार उस समय प्राप्त ज्ञात तर्क, अनुभव आदि के आधार पर उन प्रश्नों के उत्तर हैं जिन्हें शोध के द्वारा तय करता है। तत्पश्चात् शोध में प्राप्त प्रदत्त सामग्री चिन्तन, तर्क, विधियों आदि की सहायता से वे उत्तर सही है कि नही इसका समाधान शोधार्थी ढूढ़ता है।

"परिकल्पना अनुसंधान पथ में प्रकाष स्तम्भ का कार्य करती है।"
– प्रो. यंग

परिकल्पना को परिभाषित करते हुए लुण्डबर्ग[2] के अनुसार ''परिकल्पना एक सम्भावित सामान्यीकरण होता है जिसकी सत्यता की जाँच अभी बाकी रहती है। अपनी अति प्रारम्भिक अवस्था में परिकल्पना एक आत्म प्रकाशन, अनुमान, कल्पनात्मक विचार, अन्तर्दृष्टि कुछ भी हो सकती है, जो अनुसंधान कार्य का आधार बन जाता है।''

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधार्थी का पूर्वानुमान परिकल्पनाओं के रूप में निम्नवत् हैः–

1. पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

7. शोध अध्ययन का परिसीमांकन

1. यह शोध अध्ययन मध्य प्रदेश राज्य के रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध कार्य रीवा विकासखण्ड से 10 हाई स्कूल स्तर के विद्यालयों को यादृच्छिकीय चयन द्वारा किया गया है।
3. प्राचार्य – प्रत्येक विद्यालय के प्राचार्य
4. शिक्षक – (प्रति विद्यालय–3) 10×3 = 30
5. विद्यार्थी – (प्रति विद्यालय–20) 10×20 = 200

8. शोध विधि

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न शोध विधियों का चयन किया गया है–

8.1 सर्वेक्षणात्मक विधि

अनुसंधान की वह पद्धति जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है, सर्वेक्षण विधि कहलाती है। शैक्षणिक अनुसंधानों में इस विधि का प्रयोग किया गया है।

इस विधि में पूर्व निर्धारित प्रश्नों के माध्यम से प्रश्नावली, साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पश्चात् उनका वर्गीकरण सारणीयन प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्याख्या एवं मूल्यांकन किया जाता है।

8.2 अवलोकन विधि

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में दूसरी सबसे अधिक प्रयोग में आने वाली विधि अवलोकन विधि है। यह विधि से संबंधित जानकारी प्राप्त करने की एक विश्वसनीय विधि है।

''कठोर शब्दों में प्रेक्षण में कानों तथा वाणी की अपेक्षा नेत्रों का प्रयोग अधिक होता है।'' – प्रो.सी.ए. मेजर

यह विधि सामूहिक व्यवहार का अध्ययन करने, निरक्षर तथा अन्य भाषा – भाषी लोगों का अध्ययन करने, प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष करने तथा शोधकर्ता कार्य कारण संबंध का पता लगाकर उसका विश्लेषण करने के काम में आती है।

8.3 अभिलेख अध्ययन विधि

अभिलेख अध्ययन से तात्पर्य शोध समस्या के उन सभी अभिलेखों, पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्रिकाओं, प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोध प्रबन्धों से है, जिनके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को बढ़ाने में सहायता प्राप्त होती है। शोधार्थी ने प्रस्तुत शोध कार्य हेतु निम्न कार्यालयों, विद्यालयों से आकड़ें प्राप्त किये हैं।

9. शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने अपने न्यादर्श के वांछित आँकड़ों के चयन हेतु प्रश्नावली उपकरण को प्रयोग किया है।

10. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से सिंह, अरुण कुमार (2006)[1], राय पारसनाथ (2004)[2], पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. (2013)[3], गुप्ता, एस.पी. (1997)[4], माथुर,एस.एस. (1973)[5], त्रिपाठी, मधुसूदन (2007)[6], शर्मा, आर.ए. (2006)[7] एवं दुबे, डॉ. सत्यनारायण (2000)[8] ने शोध विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

11. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयेाग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना – 1 ''शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की बुद्धि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सहसंबंध में कोई सार्थक अंतर नहीं है।"

तालिका क्रमांक 1 : शैक्षिक उपलब्धि तथा सर्वांगीण विकास के संबंधित जानकारी

क्र.	प्रश्न	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	किन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अच्छी होती है?	▪ खेलों में भाग न लेने वाले	6	60.00
		▪ खेलों में भाग लेने वाले	4	40.00
2.	आपके विद्यालय में साहित्यिक– सांस्कृतिक क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि इनमें भाग न लेने वालों की तुलना कैसी है?	▪ कम	–	–
		▪ अधिक	8	80.00
		▪ सामान्य	2	20.00
3	किन छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है?	▪ पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले	10	100
		▪ पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग ने लेने वाले	–	–

विश्लेषण एवं व्याख्या : उपरोक्त तालिका क्रमांक–1 से स्पष्ट है कि 60.00 प्रतिशत प्राचार्यों का मानना है कि खेलों में भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि खेलों में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अच्छी होती है। 80.00 प्रतिशत प्राचार्य का मत है कि साहित्यिक–सांस्कृतिक क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि इनमें भाग न लेने वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक है। शत–प्रतिशत प्राचार्यों का मत है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का ही सर्वांगीण विकास होता है।

तालिका क्रमांक 2: पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के आयोजन से संबंधी जानकारी

क्र.	प्रश्न	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	विद्यालय में कौन–कौन सी पाठ्य–सहगामी क्रियाएं आयोजित की जाती है?	▪ खेल–कूद	–	–
		▪ साहित्यिक–सांस्कृतिक	–	–
		▪ सामाजिक–सैनिक	–	–
		▪ उपर्युक्त सभी	30	100
2.	पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के आयोजन में आप का सहयोग रहता है?	▪ हमेंशा	9	30.00
		▪ यदाकदा	21	70.00
		▪ कभी नहीं	–	–

विश्लेषण एवं व्याख्या : तालिका क्र. 2 से स्पष्ट है कि शत–प्रतिशत विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। 67 प्रतिशत शिक्षक इन क्रियाओं के आयोजन में यदा–कदा ही सहयोग करते हैं और केवल 33 प्रतिशत शिक्षक ही इन क्रियाओं के आयोजन में विशेष रूचि लेते हैं।

तालिका क्रमांक 3: पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के आयोजन से संबंधित जानकारी

क्र.	प्रश्न	उत्तर	संख्या	प्रतिशत
1.	विद्यालय में कौन–कौन सी पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया गया?	▪ खेल–कूद	–	–
		▪ साहित्यिक–सांस्कृतिक	–	–
		▪ सामाजिक–सैनिक	10	100.00
		▪ उपर्युक्त सभी	–	–
2.	उपरोक्त क्रियाएं कब आयोजित की गई?	▪ साप्ताहिक	1	10.00
		▪ मासिक	1	10.00
		▪ राष्ट्रीय त्योहारों पर	6	60.00
		▪ समय निश्चित नहीं	2	20.00

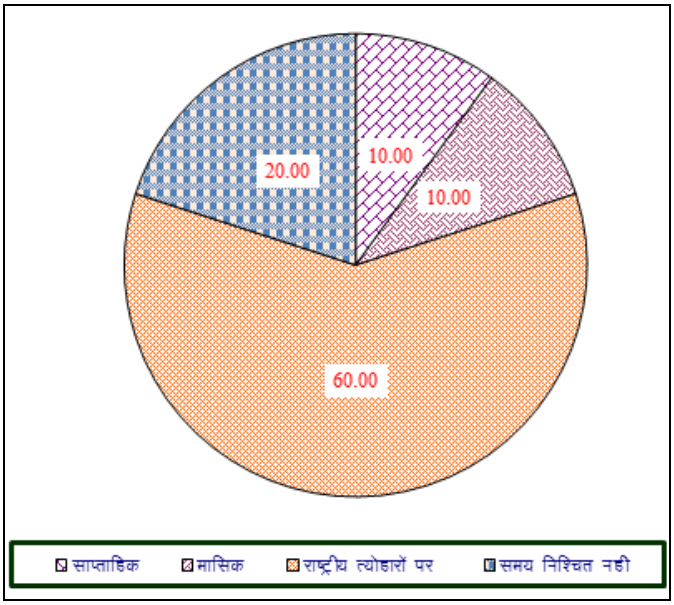

आकृति 1: पाठ्य–सहगामी क्रियाओं के आयोजन से संबंधित जानकारी (शाला अभिलेख पत्रक के आधार पर)

विश्लेषण एवं व्याख्या : तालिका क्र. 3 से स्पष्ट है कि शत–प्रतिशत विद्यालयों में पाठ्य–सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाता है। 60.00 प्रतिशत विद्यालयों में ये क्रियाएं राष्ट्रीय त्यौहारों जैसे गांधी जयन्ती, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस पर आयोजित की गई जबकि 10.00 प्रतिशत में साप्ताहिक, 10.00 प्रतिशत मासिक तथा 20.00 प्रतिशत विद्यालयों इनके आयोजन का समय निश्चित नहीं है।

तालिका क्रमांक– 1, 2 तथा 3 से स्पष्ट है कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तो अधिक होती है साथ ही ये क्रियाएं विद्यार्थियों में अनेक नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चरित्रिक गुणों का विकास करती है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

अतः परिकल्पना क्रमांक – 1 पूर्ण रूपेण सत्यापित होती है।

12. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में रीवा विकासखण्ड के हाई स्कूल स्तर पर पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का अध्ययन किया गया है। इस अध्ययन के द्वारा शोध कार्य में प्रयुक्त दो चरों के परिणामों की तुलना परिकल्पनायें बनाकर की गयी है और जो परिणाम आये हैं उनसे ज्ञात हुआ कि पाठ्य–सहगामी क्रियाओं में भाग लेने वाले विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि तो अधिक होती है साथ ही ये क्रियाएं विद्यार्थियों में अनेक नैतिक सामाजिक, सांस्कृतिक एवं चरित्रिक गुणों का विकास करती है जिससे विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है।

13. संदर्भ

1. अरुण कुमार सिंहः शिक्षा मनोविज्ञान, भारती भवन पब्लिशर्स, पटना, 2006; 436.
2. राय पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल प्रकाशन, संकरण–2004, 65
3. पाठक, पी.डी. एवं मंगल, एस.के. : अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 2013.
4. गुप्ता, एस.पी. : सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, 1997.
5. माथुर, डॉ. एस.एस. : शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा : विनोद पुस्तक मन्दिर, 1973.
6. त्रिपाठी, प्रो. मधुसूदन : शिक्षा दर्शन और मनोविज्ञान का शब्दकोश, खण्ड–5 बाल विकास, ओमेगा पब्लिकेशन्स, दिल्ली, 2007.
7. शर्मा, आर.ए. : शिक्षा अनुसन्धान, मेरठ : आर. लाल. बुक डिपो, 2006.
8. दुबे, डॉ. सत्यनारायण : अध्यापक शिक्षा इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2000.